EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 2, Issue 4, October-December, 2023, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

रामायण में नारी शक्ति का चित्रण

डॉ. मोनिया दीक्षित

सार

रामायण आदि कवि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है। इसके 24000 श्लोक हैं। रामायण के सात अध्याय हैं जो काण्ड के नाम से जाने जाते हैं। सीता रामायण में केंद्रीय महिला चरित्र थी, जबकि द्रौपदी महाभारत में उसके समकक्ष थे। हालांकि इन दोनों महिलाओं को एक-दूसरे से बहुत भिन्न रूप से चित्रित किया गया है, यह तथ्य यह है कि इन दो बहुत शक्तिशाली पात्रों के बीच दो महान महाकाव वास्तव में घूमते रहे हैं। यह हिन्दू स्मृति का वह अंग हैं जिसके माध्यम से रघुवंश के राजा राम की गाथा कही गयी। इसे आदिकाव्य भी कहा जाता है।

परिचय

रामायण राम की जीवन गाथा तो है ही साथ ही रामायण में ऐसी बातें और सूत्र भी मौजूद है जो नारी को महान बनाते हैं। रामायण में ऐसी कई नारियां हैं जिन्होंने अपना धर्म पूरी निष्ठा के साथ निभाया और इसी वजह से वे आज भी पूजनीय है। रामायण की प्रमुख महिला पात्र सीता, कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, अहिल्या, उर्मिला, अनसूया, शबरी, मन्दोदरी, त्रिजटा और शूर्पणखा, लंकिनी, मंथरा हैं। इन सभी महिलाओं में सीता, उर्मिला, अनसूया और मंदोदरी इन महिलाओं को सदैव पूजनीय माना गया है क्योंकि इन्होंने अपना पतिव्रत धर्म कभी नहीं छोड़ा। इनके अतिरिक्त भक्ति-भावना की प्रतिमूर्ति शबरी भी है। लंका में सीता की रखवाली करने वाली त्रिजटा भी है जो राक्षसी होते हुए भी सीता की सेवा कर खुद को अनुगृहित मानती है।

ऐसा कहा जाता है कि दुनिया के सबसे हिंसक युद्ध एक कारण से लड़ते हैं - एक महिला के प्यार को प्राप्त करने के लिए । यह सीता और द्रौपदी के बारे में सच है, जो वास्तव में, रामायण और महाभारत दोनों में छिड़ गई बड़ी लड़ाई के लिए जिम्मेदार थे। वे अप्रत्यक्ष रूप से, इन दोनों महाकाव्यों के अस्तित्व का कारण थे।

वहीं शूर्पनखा जैसी राक्षसी और मंथरा जैसी कुविचारों वाली स्त्रियां भी हैं, जिनसे यह सीख ली जा सकती है कि जीवन में कौन सी गलतियां नहीं करनी चाहिए।

सीता: सीता को धरती की पुत्री माना गया है। सीत अर्थात् हल की नोक से उत्पन्न हुई कन्या सीता कहलाई। सीता में सहनशील, ज्ञानी, पतिव्रता, एक अच्छी बहु, कुशल गृहिणी आदि सभी गुण थे जो

स्त्रियों को महान बनाते हैं। हजारों सेवक होने पर भी वह अपने पति श्रीराम की सेवा खुद ही करती थी। वनवास राम को हुआ था लेकिन सीता भी उनके साथ गईं, जिस प्रकार सीता अपने पति के सुख-दुख में भागीदार बनीं और विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना पतिव्रत धर्म का उल्लंघन नहीं किया। रावण के वैभवशाली राज्य में रहकर अपना चरित्र नहीं छोड़ा। वह शिक्षा देती है कि हमें खासकर आज की नारियों को अच्छी-बुरी परिस्थितियों में अपने पति और परिवार का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। सबसे बड़ा व्रत चरित्र का होता है, किसी भी परिस्थिति में अपना चरित्र हमेशा स्वच्छ बनाए रखना चाहिए।

उर्मिला: उर्मिला सीता की छोटी बहन एवं लक्ष्मण की पत्नी थी। अपने पति के वनवास जाने पर भी पति के सेवा धर्म में उन्होंने कोई विघ्न उत्पन्न नहीं किया। 14 वर्ष तक महल में रहकर भी तपस्चर्या जीवन व्यतीत किया तथा सभी सासों की समभाव से सेवा की। उनके इसी त्याग से लक्ष्मण ने श्रीराम की सेवा पूरी निष्ठा से कर सके। उर्मिला का पूरा जीवन सीता के त्याग से भी कही अधिक महान माना गया है। आज की नारियों के लिए उर्मिला एक ऐसा उदाहरण है जो पति और ससुराल के प्रति त्याग और समर्पण सिखाती है।

मंदोदरी: राक्षस राज रावण की पटरानी होने के बावजूद वह बहुत धार्मिक, गर्वहीन, पतिव्रता महिला थी। अपने पति को सही सलाह दी एवं समय-समय पर अच्छा-बुरा क्या है समझाया। रावण का दुर्भाग्य था जो उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। मंदोदरी ये जानती थी रावण ने सीता हरण कर एक अधार्मिक कार्य किया था परंतु मंदोदरी ने रावण को बहुत समझाया। वह जान गई थी कि श्रीराम सामान्य मानव नहीं है और रावण अंत निकट आ गया है। ऐसे में भी उसने पतिव्रत धर्म निभाया।

अनसूया: अनसूया का अर्थ है जिसको सूया ना हो। अर्थात् किसी को ईष्र्या ना हो। ईष्र्या सदा खुद का ही नाश करती है। अनसूया ब्रह्मर्षि अत्रि की पत्नी हैं। सामान्यत: आज की काफी नारियों में यह दुगुर्ण देखने को मिल जाता है और वे इसी के वश होकर अपना भविष्य और पारिवारिक जीवन को काफी हद तक प्रभावित कर देती है। अनसूया से सीखा जा सकता है कि ईष्र्या त्याग कर सभी को साथ लेकर सहज और सुखी जीवन व्यतीत करें।

त्रिजटा: रावण के राज में त्रिजटा प्रमुख राक्षसी थी जिसे रावण ने सीता की देख-रेख की नियुक्त किया था। राक्षसों के बीच रहकर भी वह धार्मिक प्रवृत्ति की थी। माता के समान वह सीता को संबल और मनोबल बढ़ाती थी। त्रिजटा यह सिखाती है कि हम किसी भी कुल में जन्म हो, किसी भी परिस्थिति में हो अच्छे कार्य नहीं छोड़ना चाहिए।

शूर्पणखा: शूर्पणखा के जीवन से यह समझना चाहिए कि जो स्त्री व्यभिचारी होकर, उन्मुक्त पुरुषों से संबंध बनाती है उसकी नाक अर्थात् में समाज इज्जत तथा कान अर्थात् लोक और परलोक दोनों का सर्वनाश हो जाता है। अत: ऐसे जीवन से दूर रहकर धार्मिक कार्यो में ध्यान दिया जाए। परपुरुष साक्षात नारायण के समान एवं परस्त्री साक्षात् महालक्ष्मी के समान होती हैं।

निष्कर्ष

रामायण के सारे चरित्र अपने धर्म का पालन करते हैं। सीता का पातिव्रत महान है। सारे वैभव और ऐश्वर्य को ठुकरा कर वे पति के साथ वन चली गईं। कौशल्या एक आदर्श माता हैं। अपने पुत्र राम पर कैकेयी के द्वारा किये गये अन्याय को भूला कर वे कैकेयी के पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती हैं जितनी कि अपने पुत्र राम पर। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, रामायण की कहानी वास्तव में प्रेरणादायक है और उभरती हुई आधुनिक भारतीय महिला के लिए एक बढ़िया उदाहरण है।

संदर्भ

[1]. सिंह, बी.पी. (2001)। गोविन्द चन्द्र पाण्डे: *Life, Thought and Culture of India — "The Valmiki Ramayana: A Study"*। Centre of Studies in Civilizations, नई दिल्ली। ISBN 81-87586-07-0।

[2]. रामचरितमानस', टीकाकार: हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक एवं मुद्रक: गीताप्रेस, गोरखपुर पृष्ठ 163

[3]. 'वाल्मीकीय रामायण', प्रकाशक: देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली पृष्ठ 12-13

[4]. रामायण का आचार दर्षन: अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव, पृ0 68

[5]. रामायण का आचार दर्षन: अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव, पृ0 101

[6]. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण

[7]. रामायण-भ्रान्तियाँ और समाधानःस्वामी विद्यानंद सरस्वती, आमुख पृ09